समन्वय

I. अपनी सेवकाई से पूर्व मसीह के जीवन का काल।
   क. लूका की भूमिका और समर्पण (लूका 1:1-4)।
   ख. यूहन्ना में परिचय (यूहन्ना 1:1-18)।
   ग. मत्ती में यीशु की वंशावली (मत्ती 1:1-17)।
   घ. लूका में यीशु की वंशावली (लूका 3:23-38)।
   ड. यूहन्ना बपस्तिमा देने वाले के जन्म की जकरयाह के पास स्वर्गदूत द्वारा घोषणा (लूका 1:5-25)।
   च. यीशु के जन्म की मरियम के पास स्वर्गदूत द्वारा घोषणा (1:26-38)।
   छ. मरियम (यीशु की होने वाली मां) का इलिशबा (यूहन्ना बपस्तिमा देने वाले की होने वाली मां) के पास जाना (लूका 1:39-56)।
   ज. यूहन्ना बपस्तिमा देने वाले का जन्म और प्रारम्भिक जीवन (लूका 1:57-80)।
   झ. यीशु के आने की यूसुफ के पास घोषणा (मत्ती 1:18-25)।
   ञ. यीशु का जन्म (लूका 2:1-7)।
   ट. चरवाहों के पास यीशु के जन्म की घोषणा (लूका 2:8-20)।
   ठ. यीशु का खतना और नामकरण; मंदिर में (लूका 2:21-39)।
   ड. पूर्व से आए ज्योतिषियों (''पण्डितों'') का यीशु के दर्शन के लिए आना (मत्ती 2:1-12)
   ढ. मिस्र में जाना व बैतलहम में बच्चों का मारा जाना (मत्ती 2:13-18)।
   ण. बालक यीशु को मिस्र से नासरत में लाया गया (मत्ती 2:19-23; देखें लूका 2:39ख)।
   त. यीशु का नासरत में रहना; बारह वर्ष की आयु में यरूशलेम में जाना (लूका 2:40-52)।

II. यूहन्ना बपस्तिमा देने वाले की सेवकाई का आरम्भ।
   क. यूहन्ना की सेवकाई (मत्ती 3:1-6; मरकुस 1:1-6; लूका 3:1-6)।
   ख. यूहन्ना का संदेश (मत्ती 3:7-12; मरकुस 1:7, 8; लूका 3:7-18)।

III. यीशु की सेवकाई का आरम्भ।
   क. यूहन्ना से यरदन नदी में यीशु का बपस्तिमा (मत्ती 3:13-17; मरकुस 1:9-11; लूका 3:21, 22; यूहन्ना 1:31-34)।
   ख. जंगल में यीशु की परीक्षा हुई (मत्ती 4:1-11; मरकुस 1:12, 13; लूका 4:1-13)।
   ग. यीशु के विषय में यूहन्ना की गवाही (यूहन्ना 1:19-34)।

घ. यीशु के प्रारभिक चेले (यहूदिया में) (यूहन्ना 1:35-51)।
ड. यीशु का पहला आश्चर्यकर्म (काना गलील में) (यूहन्ना 2:1-11)।
च. कफरनहूम में यीशु का पहला ठिकाना (गलील में) (यूहन्ना 2:12)।

IV. पहले से दूसरे फसह तक।
क. यीशु का सेवकाई का पहला फसह।
1. मंदिर को शुद्ध करना (यूहन्ना 2:13-25)।
2. नीकुदेमुस को सिखाना (यूहन्ना 3:1-21)।
ख. यहूदिया में प्रथम सेवकाई (और यूहन्ना की और गवाही) (यूहन्ना 3:22-36)।
ग. यहूदिया से गलील में जाना।
1. जाने के कारण (मत्ती 4:12; मरकुस 1:14; लूका 3:19, 20; यूहन्ना 4:1-3)।
2. सामरिया की घटना (यूहन्ना 4:4-42)।
3. गलील में पहुंचना (लूका 4:14; यूहन्ना 4:43-45)।
घ. गलील में यीशु की शिक्षा का एक सामान्य विवरण (मत्ती 4:17; मरकुस 1:14, 15; लूका 4:14, 15)।
ड. काना में दूसरा आश्चर्यकर्म (यूहन्ना 4:46-54)।
च. कफरनहूम से गलील में जाना (मत्ती 4:13-16)।
छ. चार मछुआरों को बुलाना (मत्ती 4:18-22; मरकुस 1:16-20; लूका 5:1-11)।
ज. कफरनहूम में: आराधनालय में दुष्टात्मा से पीड़ित व्यक्ति को चंगा करना (मरकुस 1:21-28; लूका 4:31-37)।
झ. कफरनहूम में: पतरस की सास और अन्य लोगों को चंगा करना (मत्ती 8:14-17; मरकुस 1:29-34; लूका 4:38-41)।
ञ. गलील में: शिक्षा और चंगाई का यीशु का पहला दौरा (मत्ती 4:23-25; मरकुस 1:35-39; लूका 4:42-44)।
ट. गलील में: एक कोढ़ी का चंगा करना-और उसका परिणाम उत्तेजना (मत्ती 8:2-4; मरकुस 1:40-45; लूका 5:12-16)।
ठ. कफरनहूम में वापस: एक झोले के मारे को चंगा करना (मत्ती 9:2-8; मरकुस 2:1-12; लूका 5:17-26)।
ड. कफरनहूम के निकट: मत्ती को बुलाहट (मत्ती 9:9; मरकुस 2:13, 14; लूका 5:27, 28)।

V. दूसरे से तीसरे फसह तक।
क. यीशु ने सब्त के दिन एक लंगड़े को चंगा किया और अपने कार्य का बचाव किया (यूहन्ना 5:1-47)।

ख. यीशु ने अपने चेलों का बचाव किया जिन्होंने सब्त के दिन अनाज तोड़ा था (मत्ती 12:1-8; मरकुस 2:23-28; लूका 6:1-5)।

ग. यीशु ने सब्त के दिन एक सूखे हाथ वाले आदमी को चंगा करने का समर्थन किया (मत्ती 12:9-14; मरकुस 3:1-6; लूका 6:6-11)।

घ. यीशु ने गलील सागर के पास बहुत से लोगों को चंगा किया (मत्ती 12:15-21; मरकुस 3:7-12)।

ड. प्रार्थना के बाद, यीशु ने बारह प्रेरित चुने (मत्ती 10:2-4; मरकुस 3:13-19; लूका 6:12-16)।

च. पहाड़ी उपदेश।

1. प्रारम्भिक कथन (मत्ती 5:1, 2; लूका 6:17-20)।
2. धन्य वचन: मसीहा के लोगों के प्रतिज्ञाएं (मत्ती 5:3-12; लूका 6:20-26)।
3. मसीहा के लोगों का प्रभाव (और जिम्मेदारियां) (मत्ती 5:13-16)।
4. मसीहा की शिक्षा का पुराने नियम से और पुराने नियम की शिक्षा पर मनुष्यों द्वारा बनाई परम्पराओं से सम्बन्ध। (मत्ती 5:17-48; लूका 6:27-30, 32-36)।
5. धार्मिक कार्य अन्दर से हों, न कि दिखावे के लिए (मत्ती 6:1-18)।
6. सांसारिक चिंताओं के विपरीत स्वर्गीय भंडार सुरक्षित (मत्ती 6:19-34)।
7. दोष लगाने पर शिक्षा (मत्ती 7:1-6; लूका 6:37-42)।
8. प्रार्थना पर शिक्षा (मत्ती 7:7-11)।
9. सुनहरी नियम (मत्ती 7:12; लूका 6:31)।
10. दो मार्ग-और झूठे भविष्यवक्ता (मत्ती 7:13-23; लूका 6:43-45)।
11. निष्कर्ष और प्रासंगिकता (दो मकान बनाने वाले) (मत्ती 7:24-29; लूका 6:46-49)।

छ. एक सूबेदार के सेवक को चंगा किया गया (मत्ती 8:1, 5-13; लूका 7:1-10)।

ज. एक विधवा का पुत्र जिलाया गया (लूका 7:11-17)।

झ. यूहन्ना बपस्तिमा देने वाले को उत्तर दिया गया (मत्ती 11:2-30; लूका 7:18-35)।

ञ. यीशु के पांव का अभिषेक किया गया (लूका 7:36-50)।

ट. गलील का दूसरा दौरा (लूका 8:1-3)।

ठ. परमेश्वर की निंदा के आरोप (मत्ती 12:22-37; मरकुस 3:20-30; लूका 11:14-23)।

ड. चिह्न ढूंढ़ने वाले (मत्ती 12:38-45; लूका 11:16, 24-26, 29-36)।

ढ. यीशु का परिवार (मत्ती 12:46-50; मरकुस 3:31-35; लूका 8:19-21; 11:27, 28)।

ण. दृष्टांतों का पहला बड़ा समूह।

1. अवसर व स्थिति (मत्ती 13:1-3; मरकुस 4:1, 2; लूका 8:4)।
2. बीज बोने वाले का दृष्टांत-और उसकी व्याख्या (मत्ती 13:3-23; मरकुस 4:3-25; लूका 8:5-18)।
3. उगने वाले बीज का दृष्टांत (मत्ती 4:26-29)।
4. जंगली बीज का दृष्टांत (मत्ती 13:24-30)।
5. राई के बीज और खमीर के दृष्टांत (मत्ती 13:31-35; मरकुस 4:30-34)।
6. जंगली बीज के दृष्टांत की व्याख्या (मत्ती 13:36-43)।
7. खजाने और मोती के दृष्टांत (मत्ती 13:44-46)।
8. जाल का दृष्टांत (मत्ती 13:47-53)।

त. तूफान को शान्त करना (मत्ती 8:18, 23-27; मरकुस 4:35-41; लूका 8:22-25)।

थ. दुष्टात्मा से ग्रस्त दो लोगों को चंगा करना (मत्ती 8:28-34; 9:1; मरकुस 5:1-21; लूका 8:26-40)।

द. पापियों के साथ खाना (और उपवास पर सन्देश) (मत्ती 9:10-17; मरकुस 2:15-22; लूका 5:29-39)।

ध. याईर की बेटी को जिलाना (और लहू बहने के रोग वाली स्त्री को चंगा करना) (मत्ती 9:18-26; मरकुस 5:22-43; लूका 8:41-56)।

न. अन्धों को और एक दुष्टात्मा ग्रस्त आदमी को चंगा करना (और आलोचना सहना) (मत्ती 9:27-34)।

प. नासरत में जाना (और ठुकराए जाना) (मत्ती 13:54-58; मरकुस 6:1-6; लूका 4:16-31)।

फ. गलील का यीशु का तीसरा दौरा (और बारह को निर्देश) (मत्ती 9:35-38; 10:1-42; 11:1; मरकुस 6:6-13; लूका 9:1-6)।

ब. यीशु में हेरोदेस की दिलचस्पी (और यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की मृत्यु का विवरण) (मत्ती 14:1-12क; मरकुस 6:14-29; लूका 9:7-9)।

भ. यीशु का हेरोदेस के इलाके से निकना (और वापस आना)।

1. बारह का लौटना और गलील सागर के पूर्वी तट की ओर जाना (मत्ती 14:12ख, 13; मरकुस 6:30-32; लूका 9:10; यूहन्ना 6:1)।
2. पांच हजार पुरुषों को खिलाना (मत्ती 14:13-21; मरकुस 6:33-44; लूका 9:11-17; यूहन्ना 6:2-14)।
3. पानी पर चलना (मत्ती 14:22-36; मरकुस 6:45-56; यूहन्ना 6:15-

21क)।

म. जीवन की रोटी पर यीशु का सन्देश (और पतरस का अंगीकार) (यूहन्ना 6:21ख-71)।

VI. तीसरे फसह से यीशु के बैतनिय्याह में आने तक।

क. तीसरा फसह (देखें यूहन्ना 6:4; 7:1)।

ख. परम्परा का पालन न करने का दोष लगना (मत्ती 15:1-20; मरकुस 7:1-23)।

ग. हेरोदेस के इलाके से निकलना (मत्ती 15:21; मरकुस 7:24)।

घ. फिनीके (या कनानी जाति) की स्त्री की लड़की को चंगा करना (मत्ती 15:22-28; मरकुस 7:25-30)।

ड. हेरोदेस के इलाके से दूर रहना (मत्ती 15:29; मरकुस 7:31)।

च. एक गूंगे समेत बहुत से लोगों को चंगा करना (मत्ती 15:30, 31; मरकुस 7:32-37)।

छ. चार हजार लोगों को खिलाना (मत्ती 15:32-39क; मरकुस 8:1-9)।

ज. हेरोदेस के इलाके से एक और बार निकलना।

1. गलील में: यीशु के शत्रुओं द्वारा एक और आक्रमण-उसके बाद एक और बार निकलना (मत्ती 15:39ख-16:12; मरकुस 8:10-21)।
2. बैतसैदा में: एक अन्धा चंगा किया गया (मरकुस 8:22-26)।
3. कैसरिया फिलिप्पी के निकट: अच्छा अंगीकार (मत्ती 16:13-20; मरकुस 8:27-30; लूका 9:18-21)।
4. कैसरिया फिलिप्पी के निकट: यीशु की मृत्यु की भविष्यवाणी (मत्ती 16:21-28; मरकुस 8:31-38; लूका 9:22-27)।
5. कैसरिया फिलिप्पी के निकट (हर्मोन पर्वत पर ?): रूपांतरण (मत्ती 17:1-13; मरकुस 9:2-13; लूका 9:28-36)।